

ओमशार्णि। मीठे<sup>2</sup> स्थाने कला बच्चों प्रित लगानी बाप बैठ समझते हैं। समझते उनको हैं जो वेसमन होते हैं। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं क्योंकि बच्चे वेसमन हैं। बच्चे पढ़ाई से समझ जाते हैं। तुम बच्चे भी पढ़ाई से समझते हो। यह तो समझते हो हमको पढ़ाने वाला कौन है। यह तो कब भूली नहीं। पढ़ाने वाला टीचर है सुप्रीम बाप। तो उनकी मत पर चलना है। श्रेष्ठ बनना है। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ होते हैं सुर्यवंशी। भल चन्द्रवंशी भी श्रेष्ठ हैं परन्तु यह हैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। तुम यहां आये हो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनने। तुम बच्चे जानते हो हमको ऐसा बनना है। ऐसा स्कूल 50000 रुपये के बाद ही खुलता है। यहां तुम समझ कर बैठे हो। यह है सच<sup>2</sup> सत कासंग। सत है ऊंच ते ऊंच। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ। उनका तुमको संग है। वह कर बैठकर सतयुग का श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ देवता बनाते हैं। अर्थात् पूल बनाते हैं। तुम कांटे से पूल बनते जाते हो। कोई पैरन बन जाते हैं कोई को टाईभूल लगता है। बच्चे जानते हैं यह है संगम युग। तो भी सिंफ तुम बच्चे ही जानते हो। निश्चय है कि यह पुस्तोल बनने का युग है। पुस्तोल भी कौन सा? ऊंच ते ऊंच आदी सनातन देवी देवता धर्म की भी जो महाराजा महारानी हैं वह बनने लिए तुम यहां आते हो। कम नहीं। समझते हो हम आये हैं बैहद के बाप से बैहद सतयुग कासुख लेने। हद की ज्ञा भी बातें हैं वह सभी छहम हो जाते हैं। हद के बाप हद के शीर्षां चौचाकाके, मामे, हद की पाई-पैसे को मिलकीयत आद जिसमें बहुत मोहर रहता है यह सभी छलास हो जानी है। बाप समझते हैं यह मिलकीयत आद हद के हैं। अभी तुमको बैहद में चलना है। बैहद की मिलकीयत प्राप्त करने लिए यहां तुम आये हो। और तो सभी हैं हद की चीजें। शरीर भी हद का है। विमार पड़ता है, विनाश हो पड़ता है अकाले मृत्यु हो जाती है। आजकल तो देखो फि क्या 2 बनाते रहते हैं। फि जैक हौशियारी की कमाल कर दिखाते हैं। माया का पत्त्य कितना है। पायंस वाले छब फिरमत कर रहे हैं। जिनके पास बहुत मह ल मारियां आद हैं वह तो समझते हैं अभी हमारे लिए सतयुग है। यह नहीं समझते हैं कि सतयुग में एक धर्म होता है। वह नई दुनिया होती हैं। बाप कहते हैं यह बिंकुल ही वेसमन है। कितने तुम समझदार बनते हो। ऊपर चढ़ते हो फि सीढ़ी नीचे उतरते हो। सतयुग में तो समझदार थे। फि 84 जन्म लेते 2 वेसमन बन जाते हैं। अपन को वेसमन समझना ही चाहिए। फि आ कर बाप समझदार बनाते हैं। जिसको ही पारस बुधि कहते हैं। तुम जानते हो हम पारस बुधि बहुत ही समझदार थे। गीत्य भी है ना बाबाओप जो बर्द देते हो सारी जगीन आकाश तथी के हम मानिक बन जाते हैं। कोई भी हम से छीन नहीं सकता। कोई ला दखल नहीं हो सकता। बाप बहुत 2 देते हैं। इससे जास्ती छोली को भर न सके। जब ऐसा बाप मिला है जिसको आथा कल्याद किया है, दुःख में सुमिरण करते हैं ना। जबसुख मिल जाता है तो फि सुमिरण की दरकार ही नहीं। दुःख में सभी सुमिरण करते हैं। हाय राम। अनेक प्रकार के अक्षर बौलते हैं। सतयुग में ऐसी कोई अक्षर होते हो नहीं। तुम बच्चे यहां आये हो पढ़ने लिए बाप के सुखसुख समुख। बाप की डायेक्टन से। इन डायेक्ट ज्ञान बाप देते नहीं। ज्ञान डायेक्ट ही मिलता है। बाप की आना पड़ता है। कहते हैं मीठे<sup>2</sup> बच्चों पास आता हूं। युवे बुलाते हो लो जावायाद। बाप भी रेसपान्ड बतते हैं ओ बच्चों। अभी मुझे अच्छी रेत याद करो। भूलो नहीं। माया के विष तो अनेक आवेगे। तुम्हारी पढ़ाईछड़ा कर तुमको देह अभिमान में लावेगी। इसलिए खबरदार रही। यह सच्च<sup>2</sup>=सच्च सु सतसुंग है। ऊपर चढ़ने का। वह और सभी सतसंग आद है उत्तराई की। सत का संग स्क ही बार होता है। झूठ कासंग जन्म-जमान्तर अनेक बार होते हैं। बाप बच्चों को कहते हैं यह तुम्हारा अंतिम जन्म है। अभी यहां चलना है जहां कोई भी अथाप्त बस्तु नहीं होती। जिसके लिए तुम पुस्तार्थ कर रहे हो। यह जो बाबा कहते हैं यह तुम अझीसुनते हो। यहां यह कुछ भी पता नहीं पड़ेगा। अभी तुम कहां जाते हो। अपने सुधर सुखाया है। सुखाया तुम्हारा नी था। तुम सुखाया में थे। अभी दृःख्याम में हो। बाबू ने बहुत सहज रस्ता बताया है। वही याद करो। हमारा धर है इंगातधारा। वहां से हैम स्वग में आवेगे। आर कोई स्वग धाम में आता नहीं। सिवाय तुम्हारा।

तो तुम ही सिमरण करते हो। हम पहले 2 सुख में जाते हैं फिर दुःख में। कालियुग में सुखधाम होता नहीं। सुख मिलता ही नहीं। इसलिए प्रह्लेद का सन्यासी भी कहते हैं सुख का विष्टा सप्ताह है। अभी बच्चे अच्छी शैतानी समझते हैं। हम घर जा रहे हैं। बाबा आया हुआ है हमको ते जाने लिए। हम पतितों को पावन बनाकर ले जावेंगे। हम पावन बनेंगे याद की यात्रा से। यात्रा में बहुत नीचे ऊपर होना होता है। कोई तो बिमार पड़ जाते हैं। फिर लौट आते हैं। यह भी ऐसे हैं। यह है रुकानी यात्रा। अन्ति मरते सो गति हो जावेगी। हम अभी अपने शान्तिधाम जा रहे हैं। हैबहुत सहज। परन्तु माया बहुत भूलाती है। माया के साथ ही तुम्हारी युद्ध है। बाप बहुत सहज कर समझते हैं। हम अभी शान्तिधाम जाते हैं। बाप को ही याद करते हैं। दैवी गुण धारण करते हैं। पवित्र बनते हैं। बस 3-4 बार्ते हैं मुख्य। जो बुधि में खना है। विनाश है तो होना ही है। 5000 वर्ष पहले भी हम गये थे फिर पहले ही हम आये। फिर जावेंगे। गायन भी है राम गयोरावण गया ब्रह्म जाके बहु परिवार। जाना तो सभी है शान्तिधाम। तुम जो पढ़ते हो उस पढ़ाई अनुसार पढ़ पाते हो। तुम्हारी एमआबेक्ट सामने खड़ी है। कोई ऋष्य कह हम साठे करें। यह (चित्र ल०ना० का) साठे नहीं है। तब क्या है। इसके सिवाय किसका साठे बेहद के बाप का। और तो कोई साठे क्रीष्णकाम के नहीं। बाप का साठे चाहते हैं। बापसे मीठी कोई चीज़ नहीं। बाप कहते हैं फ्रेटे२ बच्चों पहले अपना साठे किया है?

आत्मा कहती है बाबा का साठ करें। तो अपना साठ किया है? यह तो तुम बच्चे जान गये हो। अभी समझ मिली है हम आत्मा है। हमारा धर है शान्तिधाम। वहाँ से हम आत्मारं आती हैं पार्ट बजाने। इमाके पलैन अवैश्वम्= अनुसार पहलेक्ष्म सतयुग में हम आते हैं। आदि और अन्त का यह है पुस्तोलम संगम युग। इसमें सिंफ्रॉन\_ ब्राह्मण ही होते हैं। और कोई नहीं। संगम युग पर ही सिंफ्रॉन ब्राह्मण। कलियुग में तो अनेकानेक धर्म कुल हैं। सतयुग में एकही डिनायस्टी होती है। यह तो सहज है ना। इस समय तुम संगम युगी ईश्वरीय परिवार के हो। न सतयुगी हो, न कलियुगी हो। यहतुम ही ब्रह्मैक्ष्मै-जानते हो। कि हम संगम युगी ब्राह्मण हैं। बाहर वाले कोई नहीं जानते। यह भी जानते हो कल्प2 बाप आकरसे सी प्रदाई पढ़ते हैं। यहाँ तुम बैठे हो तो यही स्मृति में आना चाहिए शान्तिधाम सुखधाम। और यह है दुःखधाम। इस दुखधाम का है वैराग्य। अथवा सन्यास बुधि से। वह कोई बुधि से सन्यास नहीं करते हैं। वह तो ऐरे बार छोड़ सन्यास करते हैं। तुमको कब बाप नहीं कहते हैं कि घर-बार छोड़ो। हाँ इतना जरूर है भारत की सेवा करनी है। वा अपनी सेवा करनी है। सेवा तो घर में भी कर सकते हैं। पढ़ने लिए आना है जरूर। फिर होशियार होकर और को भी आप समान बनाना है। टाईम तो बहुत थोड़ा है। गायन भी है बहुत गई थोड़ी रही। बहुत गई कब सुनी? परमपरा से नहीं। इवापर से जब तमोप्रधान बनते हो तब ही कहते हैं बहुत गई... दुनिया के मनुष्य तो विस्तुल ही घोस-अंधियरे में हैं। समझते हैं अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तुमको बाप समझते हैं बच्चों और बाकी थोड़ा स्मृति समय है। बहुत2 झगड़े आद हैं। आपस में लड़ते ही रहते हैं। दिन प्रति दिन बुधि तमोप्रधान बनती जाती है। कितने ४० मनुष्य हैं। सतयुग नई दुनिया में श्री इतने मनुष्य होंगे ही नहीं। नई दुनिया है स्वर्ग। वहाँ बहुत ही थोड़े आदमी हैं। ब्रह्म को पिश्ना जरूर है। इमार में एक श्रैवै सेकण्ड का भी पर्क नहीं पड़ सकता। अभी बच्चों को बहद में टिकना है। सारी दुनिया में जोकुछ चल रहा है सब नूर है। जूँ मिशल इमार चल रहा है। अभी इमार का चक्र पूरा हो फिर रिपीट होना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरापी रीपिट होनी है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरापी सिवाय तुम बच्चों और कोई नहीं जानते। रचना के आदि मध्य अन्त को कहा जाता है वर्ल्ड कीहिस्ट्री जागरापी। सिवाय तुम बच्चों के और तो सभी घोस-अंधियरे में हैं। कल्प2 घोर-अंधियरे में ही रह जातेश हैं। अभी तम बच्चे जानते हो कलियुग का श्री अन्त और सतयुग का आदि है। फिर वहो आकर पढ़ेंगे जो सतयुग में जाने वाले होंगे। अनेक वर तुम नै पढ़ा है। अपना स्वर्ग स्थापन करते हो। श्रीमत

परायह भी जानते हो उंच ते उंच भगवान आते भी है भारत में। कल्पपहले भी आये थे। तुम कहेगे कल्प 2 ऐसे बाप आते हैं। कहते कल्प 2 मैं ऐसे ही स्थापन करंगा। विनाश भी तुम देखते हो। तुम्हारी बुधि मैं सभी बैठता जाता है। जानते हो स्थापना विनाश पालना का कर्तव्य कैसे होता है। तुम जानते हो फिर औरों को समझाना है। आगे नहीं जानते थे। बाप को जानने से ही बाप द्वारा तुम सभी कुछ जान जाते हो। ~~खल्कल्ड~~ की हिस्ट्री जागराती यर्थातरीति से तुम जानते हो। मनुष्य कैसे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं यह बाप तुमको समझते हैं। तुम्हीं फिर औरों को समझाना है। क्योंकि सभी बुधि हीन अर्थात् पत्थर बुधि है। तुम अभी पारस गुदि बन रहे हो। सत्युग मैं होते हो हैं पारस बुधि। पत्थर बुधि कालयुग मैं होते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। इनका ही गीता रणीसुड कहा जाता है। जब पत्थर बुधि से पारस बुधि बनते हो। गीता सुनाने वाला तो भगवान खुद है। मनुष्य नहीं सुनाये। तुम आत्मारंसुनते हो फिर औरों को सुनते हो। इनको कहा जाता है रहानी नालेज। जो रहानी भाईयों को समझाते हैं। बृद्धि को पाते रहते हैं। जानते हो सत्युग का सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी झाइ है। पहले हूँ सूर्यवंशी। फिर उनके साथ है चन्द्रवंशी। तुम जानते हो बाप आकर ~~खल्कल्ड~~ के सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी डिनायरी स्थापन करते हैं। किन द्वारा? ब्रह्मा मुख वंशावली ब्रह्मण कुल भूषणो द्वारा। बाप श्रीमत देते हैं। यह समझने की बातें हैं। दिल पर नैटरहना है। यह तो बहुत सहज है। यह है दुःखधाम। अभी हमको घर जाना है। कलियुग के बाद है सत्युग। बहुत तो बहुत छोटी और सहज है। भल तुम न पढ़ी हो तो भी कोई हर्ज नहीं जो लिखना जानते हैं उन से फिर सुनना चाहिए। शिव बाबा है सभी आत्माओं का बाप। अभी उनसे वर्षा लैना है। बाप निश्चय करेंगे तो स्वर्ग का वर्षा मिलेंगा। अन्दर मैं यह अजपा जाप चलता रहे। शिव बाबा से वेहद सुख स्वर्ग का मिल रहा है। इसलिए शिव बाबा को याद कर जरूर करना है। अभी को हक है वेहद के बाप से वर्षा लैने का। जेहे इद का वर्ध राईट मिलता है वैसे यह फिर है वेहद का। शिव बाबा से तुमको सारे विश्व का राज्य मिलता है। छोटे 2 बच्चों को भी यह समझाना चाहिए। हरेक शास्त्र का हक है बाप से वर्ध राईट लैने का। कल्प 2 लेते भी जरूर हैं। तुम वर्षा लैते हो जीवन मुक्ति का। जिनको मुक्ति का फल मिलता है वह भी जीवन मुक्ति मैं आते जरूर हैं। पहला जन्म तो सुख का ही होता है। तुम्हारा यह है 34वां जन्म। यह नालेज सारितुश्शारी बुधि मैं रहनी चाहिए। वेहद का बाप हमको पढ़ते हैं। गड शूलीं मत। जीता मैं सिंक नाम बदल दिया है। कितनी बड़ी ते बड़ी भूल है। सिवाय तुम्हारे और कोई को पता नहीं है। भारत का शास्त्र भी मुख डे गीता। तुम चिन्हों के ऊपर मैं भी लिखते हो शिव भगवानुवाचः दही उंच ते उंच हैं। कृष्ण तो देहधारि हो जाता है। देहधारि कब ज्ञान दे न सके। उसमें रहानी ज्ञान होता नहीं। तुमको समझाया जाता है भाई समझो। जो भी मनुष्य मात्र हैं और किसकी भी यह शिक्षा नहीं मिलती। भल = गीता भी सुनते हैं कि भगवानुवाच काम महाज्ञान है। अ इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। परन्तु समझते नहीं हैं। अभी भगवान तो है दूष। देवतारं भी भगवान से सत्य दीखे हैं। कृष्ण ने भी पद कहां से पाया। ल०८० यह कैसे बने। तुम इन्होंने पुजारी थे। परन्तु यह पता थीं ही था कि इन्होंने राज्य कैसे पाया। क्या कर्मिकर्य। कोई बता ~~खल्कल्ड~~ राज्यकारी अभी तुम ही जानते हो। निराकार बाप ने इन्हों को कैसे कर्म सिखाया। ब्रह्मा तनसे शिव बाबा ने इनकी ईसावनादा। यह श्रेष्ठ है ना। अभी तुम हो म्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमोशियां। तुम्हारे पारा नालेज है रहानी बाप की। तुम समझते हो हम भगवान को जान गये। उंच ते उंच भगवान वह है निराकार। उनका साकार ल्य है नहीं। बाजी जो भी देखते हों वह साकार है। मंदिरों मैं भी लिंग देखते हो। अर्थात् उनको शरीर नहीं है। इसे नहीं कि नाम ल्य से न्यारा है। लिंग है, नाम है तब तो पूजा करते हैं। फिर न्यारा भैं कहते हैं। पत्थर बुधि मनष्य है ना। अभी तुम समझते हो। और सभी देहधारियों का नाम पड़ता है। जन्मपत्री है। शिव बाबा तो है निराकार। उनका जन्मपत्री नहीं। और सभी मनुष्य मात्र के जन्मपत्री है। कृष्ण के है नववर्णन। जो बधू बनते हों शिवजयन्ति भी मनाते हैं। शिव बाबा है निराकार।

कल्याण करो। बाप आते हैं तो जरुर वर्सा देंगे। उनका नाम ही है शिव। दूसरा कोई उनका नाम पड़ता ही नहीं। जो बात करता है वह भी निराकार। यह है स्त्रानी नालैज तो स्त्रानी बाप ही देते हैं। वह बाप भी टीवर भी है। सद्गुरु भी है। वह एक ही है। कितना अच्छी रीत पर्याप्त है। बच्चे जानते हैं स्त्रानी बाबा हम स्त्रों को पढ़ते हैं। भक्ति मार्ग में कब सुना है क्या कि आत्माओं को परमात्मा पढ़ाते हैं। नहीं। वहाँ तो भगवानुवाच होता नहीं। कृष्णकी भगवान क्यों कह देते क्योंकि भगवान् ने कृष्ण को ऐसाबनाया। इसलिए उनकी भी भगवान भगवती कह देते हैं। कहेंगे इन्होंने कैसा किसने बनाया? भगवान नै। भगवान तो अलग चीज़ हौ गया छै ना। कैसे पर्याय यह तुम ही जानते हो। तुम बनरहे हो। क्षे गाया जाता है सहज याद और सहज ज्ञान। ज्ञान किसका देते हैं। क्या शास्त्रों का? यहकोई शास्त्र तो नहीं पढ़ते हैं। ब्रह्मा द्वारा बाप स्थापना करते हैं। स्थापना ज्ञानसे होता है ना। भार्यशाली स्थ पर बैठ ज्ञान देते हैं। बाप तुमको कहते हैं तुम पदमापदमधार्ष शाली हो। बाप तुमको कितना ऊंच बना रहे हैं। तुम यह ल०ना० बनते हो। शरीर तो तुम भी बदलेंगे। तुम यहाँ आये ही हो मनुष्य से देवता बनने लिए। पहलै२ फिर तुम देवता बनते हो। फिर उतरते हो। ५००० बर्ष बाद कुम्भ होता है। कुम्भ संगम को कहा जाता है। ज्ञानसागर बापको तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते। ज्ञानसागर शिव बाबा की सारी जीवन कहानी तुम बच्चे जानते हो। बाप कहते हैं मैं आकर अपनी जीवनकहानी और स्वना के आदि मध्य अन्त की कहानी सुनाताहूँ। जो तुम अभी सुन रहे हो। कहते हैं ना देवताओं का छाया नहीं पड़ता। मनुष्य का छाया पड़ता है। शिव बाबा का छायापर सकता है क्या। बिन्दी का क्या छाया होगा। जनावर आद का छाया होता है। छाया सभी के होते हैं। देवताओं का भी पड़ता है परन्तु इस पातत सृष्टि में नहीं। वह रहते ही हैं पावनसृष्टि में। तुम बच्चे बाप के पास आते हो दीक्षा लिए हो। जानते हो बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हो। कैसे, सिर्फ कहते हैं अलफ को याद करो तो बादशाही तुम्हारी है। बेहद का बाप बेहद की बादशाही देने वाला है। अलफ को जानने से तुम स्वर्ग वासी जरुर बनेंगे। हम गैरन्टी करते हैं। जो जानते हैं वहो स्वर्ग में जावेंगे। परन्तु उसमें भी राजाई है। जितना जो पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। पढ़ना जरुर है। बाप पढ़ते हैं तो स्टुडन्ट का फर्ज है पढ़ना। बापसे कितनी बड़ी लादी मिलती है। यह ल१८८० बनने की तो क्यों न हम लें। बाप कहते हैं नालैज तो बहुत ही सहज है। औरों को भी देनी है। राजाई स्थापन हो रही है प्रजा भी बनानी है। जो बहुत सर्विस करते हैं वह सभी को दिल लगते हैं। ऊंच पद भी पाते हैं। यह है ऐसा। कहे को? याद की यात्रा की। अपन को आत्मा समझ। बाप की याद करो। आत्मा तो तुम हो ही। शान्तिधाम में शरीर होता ही नहीं। तुम रहवासी वहाँ के हो फिर यहाँ पार बजाने आते हो। बाप कहते हैं मैं भी साधारण तन मैं आता हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना लगा हुआ है। तुम देखते हो स्थापना हो रही हैं। तुम से पूछते हैं तुम क्या सर्विस करते हो। बोलो तुम जो मां गते हो वह हम सर्विस करते हैं। विश्व भैरव में शान्ति मांगते हो ना। हम वह सर्विस करते हैं। बल्ड से हम लिखकर देते हैं १२८८५ के अन्दर विश्व में शान्ति स्थापन कर दिखावेंगे। विश्व में शान्ति थी ना इनके राज्य में शान्ति थी। रक्राज्य था। अभी फिर रिपीट कर रहे हैं। शान्तिधाम जाने लिए तुम बाप को याद करते हो। पुराना शरीर छोड़ घर जाना है यह तो बहुत अच्छा है। यह प्रेक्टीस करनी है। फिर जो श्रीमत पर चलेंगे वही श्रेष्ठ बनेंगे। नम्बरवार भी जावेंगे अपनु प्रश्न पुर्णार्थ अनुसार। जो नम्बर चाहिए बनो। बाबा मामा को फलो करो। तो तुम माला मैं आ जावेंगे। माला का ज्ञान धी किसको नहीं है। कोई भी देहधारी को यह ज्ञान नहीं है कि माला किसकी बनी हुई है। सभी कहते हैं माला जपो परन्तु है किसकी बनी हुई वह तो बताओ। कब नहीं बतावेंगे। उपर मैं है शिवबाबा फिर ब्रह्मासस्वतो। फिर है माला। प्रवृत्ति प्रार्ग को जोड़ी है। निवृत्तिमृग की माला होती नहीं। यह बेहद सन्यास। वह है हृद का। परानी छोड़ नई दिनिया मैं जाने पुर्णार्थ करते हो। ज्ञाप कहते मैं याद करो। याद कहती अपनेपति को याद करो। गृहस्थं व्यवहारं मैं रहते देखते हुये न दखो। मुझे याद करो तो पावन बनेंगे।